B.Ed 1st year UNIT-3
(2020 - 2022)

कक्षा - कक्ष और भाषा
Classroom and Language

कक्षा - कक्ष और भाषा [classroom and Language] :—

विद्यालय में होनेवाली क्रियाओ में कक्षा - कक्ष का अपना विशिष्ट महत्व है। कक्षा - कक्ष शिक्षण प्रक्रिया का प्रमुख आधार है, जो बालक के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भुमिका निभाता है। कक्षा - कक्ष में शिक्षक और छात्रो का परस्पर संवाद शिक्षण प्रक्रिया को आगें बढ़ाता है, कक्षा - कक्ष ही वह स्थान है, जहाँ भविष्य के लिए शिक्षित नागरिक तैयार होते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिक्षा प्रक्रिया में कक्षा - कक्ष एक उपयोगी साधन है। कक्षा - कक्ष से भाषा शिक्षण में सम्वाद एवं बातचीत बहुत महत्वपूर्ण और कक्षा - कक्ष परस्पर संवाद के लिये सबसे उत्तम साधन है। एक अच्छे कक्षा - कक्ष में शिक्षण से छात्रों के अधिगम स्तर में वृद्धि होती है, और छात्र अधिगम में अपनी रूचि का भी प्रदर्शन करते है।

भाषा की उत्तम कक्षा के लिए आवश्यक है कि इसमें उन सभी महत्वपूर्ण तथ्यों और बातों का समावेश हो जो छात्रो को भाषायी प्रदर्शन

में दक्ष बना सकें। अतः भाषा की कक्षा कैसी हो? इस प्रश्न के उत्तर को निम्नलिखित आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है :—

① बालक शिक्षा प्रक्रिया की धुरी के समान है। समस्त शिक्षा प्रक्रिया के चारों ओर भ्रमण करती है। अतः इस महत्व को दृष्टिगत रखते हुए कक्षा - कक्ष बालक की आवश्यकताओं, क्षमताओं, शक्तियों एवं रुचियों के अनुरूप निर्मित किया जाना चाहिये।

② भाषा की कक्षा में अक्षरों और व्यंजनों के चार्ट आवश्यक रूप से लगे होने चाहिये जो आकार में पर्याप्त बड़े और स्पष्ट हों।

③ श्यामपट्ट सभी विषयों के कक्षाओं के लिये एक आवश्यक उपकरण है। किन्तु भाषा कि कक्षा में इसका अपना अलग ही स्थान है। भाषा शिक्षण में छात्रों की वर्तनी और उच्चारण में सुधार श्यामपट्ट द्वारा ही होता है।

④ विभिन्न परिवेशीय वस्तुओं, जीवों और महापुरुषों के चित्र और स्लोगन के चार्ट भी छात्रों को आकर्षित करते हैं।

⑤ भाषा कि कक्षा में बैठने की व्यवस्था भी उत्तम होनी चाहिये।

⑥ कक्षा- कक्ष में समुचित आवागमन और स्वच्छता की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

⑦ भाषा की एक अच्छी कक्षा के लिये अनुशासन का बहुत बड़ा महत्व है। एक - एक शब्द के शिक्षण पर बल दिया जाता है। यदि शिक्षण के समय कक्षा में शोरगुल या अन्य कोई व्यवधान होता है तो शिक्षण प्रक्रिया बाधित होती है।

⑧ भाषा कक्षा में उत्तम शिक्षण के लिये सुनो और बोलो विधि का प्रयोग किया जाना ठीक रहता है यह विधि श्रवण और भाषण कौशल के लिए उत्तम विधि है।

⑨ सप्ताह में एक दिन बाल सभा का आयोजन शिक्षक द्वारा किया जाना चाहिए।

⑩ भाषा की एक कक्षा वही सफल होगी जो भाषा शिक्षण के उद्देश्य प्राप्त करने में शिक्षक और छात्रों के लिये सहायक हो।

कक्षा - कक्ष में और भाषा शिक्षण से निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ती कर सकते हैं:-

1. छात्रों के शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
2. छात्रों को मुहावरों और लोकोक्तियों आदि का ज्ञान देना।
3. छात्रों को विराम चिह्नों से अवगत कराना।
4. छात्रों को व्याकरण के नियम सिखाना।
5. छात्रों को शुद्ध वाचन की शिक्षा देना।
6. छात्रों को मौखिक रूप से अर्थग्रहण की शिक्षा देना।
7. छात्रों में मौखिक अभिव्यक्ति, स्मरण शक्ति का विकास करना।

कक्षा - कक्ष व्यवस्था की प्रक्रिया
process of class-Room organizing.

इसके निम्न प्रक्रिया है :—

① नियोजन [planning] — शिक्षण कार्य प्रारम्भ करने से पहले शिक्षक पाठ्यक्रम को पूर्ण रूप से व्यवस्थित कर लेता है। यानि नियोजन किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए सर्वोत्तम कार्यपथ का चुनाव करने एवं विकास करने की जागरूक प्रक्रिया है। यह वह प्रक्रिया है जिस पर भावी प्रबन्ध प्रकार्य निर्भर करता है।

② व्यवस्था [organizing].

③ छात्रों को अग्रसर तथा प्रेरित करना — शिक्षक को चाहिए कि शिक्षण कार्य के समय प्राथमिक कार्य छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करना है। वह छात्रों का शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने को अग्रसर तथा प्रेरित करे।

④ नियंत्रण [controlling]- इसमें शिक्षक को सीखने या अधिगम प्रणाली का अवलोकन करना। इसके साथ - साथ कक्षा - कक्ष को अनुशासन में रखना। और शिक्षण अधिगम प्रणाली का मुल्यांकन करना।

कक्षा - कक्ष के बाहर भाषा के कार्य
Functions of Language Outside the classroom

कक्षा - कक्ष के बाहर भी भाषा का प्रयोग व्यापक रूप से होता है। प्रयोग अनौपचारिक रूप में पाया जाता है। घर - परिवार में प्रयोग की जाने वाली भाषा का स्वरूप कक्षागत भाषा से भिन्न होता है। बाहरी व्यवहार एवं विकास प्रक्रिया में भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। सीखने की प्रक्रिया कक्षा के बाहर तथा विद्यालय दोनों में ही होती है। कक्षा - कक्ष के बाहर की भाषा के प्रयोग के स्वरूप निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है:-

① सामाजिक दायित्वों का निर्वहन — विद्यालय के बाहर अनेक प्रकार की क्रियाओं में भाग लेना है। इन क्रियाओं को सम्पन्न करने में भाषा का ही उपयोग होता है

② सांस्कृतिक विकास में उपयोग — भारत में अनेक प्रकार की सभ्यताएँ एवं संस्कृतियाँ पायी जाती है। इनका आदान - प्रदान भाषा द्वारा ही सम्भव होता है। इसके लिए एक मध्यस्थ भाषा का प्रयोग किया जाता है या दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है।

③ विचार विनिमय में उपयोग — विचार विनिमय की प्रक्रिया विद्यालय की अपेक्षा विद्यालय के बाहर व्यापक रूप से सम्पन्न होती है क्योंकि विद्यालय से बाहर बालक अधिक रहता है।

④ सामाजिक परम्पराओं का ज्ञान - बालक समाज में अनेक प्रक्रियाओं को सम्पन्न होते हुए देखता है, जैसे - वैवाहिक कार्यक्रम, कृष्ण लीला आदि

⑤ विचारों का एकत्रीकरण।

⑥ राष्ट्रीय एकता की भावना।

⑦ मनोरंजन का आधार।

⑧ सृजनात्मकता क्षमता का विकास।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त विवेचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि कक्षा - कक्ष में शिक्षण के दौरान प्रत्येक छात्रों के व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखते हुए उनकी आवश्यकताओं, क्षमताओं, शक्तियों एवं रुचियों के अनुरूप ही निर्मित किया जाना चाहिए।

=.